SANJAY
STORE TEXTILES
Dara Market, Johari Bazar &
Tonk Road, Paanch Batti JAIPUR
2570847

दिसंबर 04, 2025

If undelivered,
Pl. return to
रमन अग्रवाल (संपादक)
हैल्थ व्यू : 170/3,
रामगली, राजापार्क
जयपुर-302004
मो. 98290-66272

राष्ट्रस्तरीय पाक्षिक पत्रिका

HEALTH VIEW

हैल्थ व्यू

कैंसर एवं गंभीर बीमारियों की रोकथाम में प्रयासरत संस्थान

सरकारी विज्ञापनों के लिए
मान्यता प्राप्त

विशेष वार्षिक सदस्यता-500/-* 1100/-* सहयोग-2100*/- विशेष सहयोग 3100*/-

वर्ष 24 अंक 20 हिन्दी/अंग्रेजी पृष्ठ 4 प्रति-2 रु., जयपुर 04 दिसंबर, 2025

चाय, नमकीन, सुपारी, मसाले, पाउडर इत्यादि की पैकिंग के लिए
ऑटोमेटिक पाउच पैकिंग मशीनें
सुरेंद्र कुमार एण्ड कंपनी
2368358, 2378231 मो. 9829013384
खंडेलवाल स्कूल बिल्डिंग, स्टेशन रोड, जयपुर

नाक की टेढ़ी हड्डी व साइनस की समस्या : सही इलाज क्यों है जरूरी

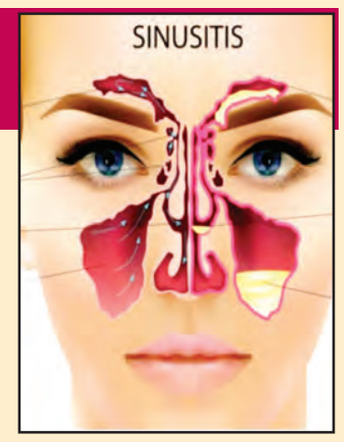

जयपुर। सुप्रसिद्ध ई एन टी स्पेशलिस्ट डॉ सुधांशु अनंत पांडे का कहना है कि नाक में हड्डी का टेढ़ा होना (डेविएटेड सेप्टम) और बार-बार होने वाली साइनस की समस्या आज आम लेकिन जटिल बीमारियों में शामिल हैं। ऐसे मामले में सर्जरी की आवश्यकता पड़ने पर सही तरह से सर्जरी होना अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यहीं से उपचार की दिशा तय होती है। ईएनटी विशेषज्ञ डॉ पांडे ने जानकारी देते हुए कहा कि नाक के भीतर की संरचना बेहद संवेदनशील होती है और हल्की सी तकनीकी गलती भी बाद में बड़ी परेशानी का कारण बन सकती है।

रिवीजन सर्जरी अत्यंत अहम प्रक्रिया

यदि समस्या फिर दोबारा उभर आए और रिवीजन सर्जरी की जरूरत पड़े, तो यह और भी संवेदनशील प्रक्रिया बन जाती है। विशेषज्ञ बताते हैं कि पहली सर्जरी के बाद नाक के अंदर स्कार टिश्यू बन जाता है, जिससे संरचना को दोबारा ठीक करना तकनीकी रूप से अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है। ऐसे में केवल अत्यधिक अनुभव वाले और रिवीजन केस हैंडल करने में दक्ष सर्जन को ही चुना जाना चाहिए। क्योंकि अगर रिवीजन सर्जरी अच्छे से ना हो तो नाक का आकार बिगड़ना, सांस लेने में स्थायी समस्या, स्टिंग, सूखी नाक, सूंघने की क्षमता कम होना तथा बार-बार ब्लीडिंग जैसे दुष्प्रभाव देखने को मिल सकते हैं। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि नाक या साइनस संबंधित सर्जरी में डॉक्टर का चुनाव उपचार की सफलता और मरीज की जीवन गुणवत्ता-दोनों को सीधे प्रभावित करता है। इसलिए साइनस सर्जरी और विशेष रूप से रिविजन साइनस सर्जरी बहुत संवेदनशील मानी जाती है। उल्लेखनीय है कि डॉक्टर सुधांशु अनंत पांडे को 1000 से अधिक सफल ऑपरेशन का अनुभव है।

संपर्क सूत्र : डॉ. सुधांशु अनंत पांडे
मो : +91 79766 09972

उन्होंने विशेष रूप से कहा कि 'सेप्टोप्लास्टी और एंडोस्कोपिक साइनस सर्जरी में अनुभव और सर्जन की तकनीकी दक्षता सबसे बड़ी भूमिका निभाती है। सही विशेषज्ञ चुना जाए तो समस्या हमेशा के लिए ठीक की जा सकती है।'

उनके अनुसार यदि पहली सर्जरी में नाक के अंदरूनी हिस्सों की एलाइनमेंट सही न बन पाए, या बीमारी पूरी तरह न निकल पाए तो समस्या रिकरेंट होने की संभावना कई गुना बढ़ जाती है। कई मामलों में मरीज को लगातार जाम नाक, सिरदर्द, सांस लेने में कठिनाई, बार-बार संक्रमण जैसी शिकायतें बनी रहती हैं।

जोड़ों के दर्द का इलाज

डॉक्टर राजीव भार्गव की सलाह और मिथकों का भंडाफोड़

इंटरनल हॉस्पिटल के वरिष्ठ अस्थि रोग विशेषज्ञ, डॉक्टर राजीव भार्गव ने जोड़ों के दर्द के इलाज से जुड़ी कई भ्रांतियों और मिथकों पर प्रकाश डाला है और सही उपचार के महत्व को रेखांकित किया है।

मुख्य बातें और मिथक-सत्य

भ्रांति (गलत धारणा) : जोड़ों का दर्द बुढ़ापे का हिस्सा है और इसका इलाज नहीं हो सकता।

वास्तविकता (सत्य) : जोड़ों का दर्द सिर्फ बुढ़ापे से नहीं होता है। यह गठिया, ऑस्टियोआर्थराइटिस, रूमेटॉइड आर्थराइटिस या चोट के कारण हो सकता है, और इसका इलाज संभव है। आजकल फिजियोथेरेपी, दवाओं और सर्जरी जैसे प्रभावी उपचार उपलब्ध हैं।

2. भ्रांति (गलत धारणा) : जोड़ों के दर्द में हमेशा पूर्ण आराम करना चाहिए।
वास्तविकता (सत्य) : अत्यधिक आराम जोड़ों की अकड़न को बढ़ा सकता है। हल्की-फुल्की एक्सरसाइज और फिजियोथेरेपी से जोड़ों को मजबूती मिलती है और दर्द में राहत मिलती है।

3. भ्रांति (गलत धारणा) : हड्डियों और जोड़ों के दर्द के लिए केवल कैल्शियम की कमी जिम्मेदार है।

वास्तविकता (सत्य) : हड्डियाँ और जोड़ों के दर्द के लिए विटामिन डी की कमी, गठिया, चोट और संक्रमण जैसे अन्य कारण भी जिम्मेदार हो सकते हैं। सिर्फ कैल्शियम सप्लीमेंट से समस्या हल नहीं होगी।

4. भ्रांति (गलत धारणा) : दर्द होने पर गर्म सेंक करना चाहिए।

वास्तविकता (सत्य) : गर्म और ठंडा दोनों प्रकार का सेंक आवश्यक हो सकता है। ठंडा सेंक सूजन को कम करता है, जबकि गर्म सेंक मांसपेशियों को आराम देता है।

5. भ्रांति (गलत धारणा) : आयुर्वेदिक तेल और घरेलू नुस्खे से दर्द पूरी तरह ठीक हो सकता है।

वास्तविकता (सत्य) : आयुर्वेदिक तेल और घरेलू नुस्खे केवल अस्थायी राहत दे सकते हैं। मूल कारण का इलाज करवाना आवश्यक है। गंभीर मामलों में चिकित्सा सलाह लेना अनिवार्य है।

डॉक्टर की अंतिम सलाह

डॉक्टर भार्गव ने बताया कि दर्द निवारक दवाएँ केवल अस्थायी राहत देती हैं और लंबे समय तक इनका उपयोग साइड इफेक्ट्स का कारण बन सकता है।उन्होंने सभी से सही जीवनशैली, संतुलित आहार, और नियमित व्यायाम को अपनाने की सलाह दी।

यदि आपको जोड़ों के दर्द की समस्या है, तो निर्धारित व्यायाम, संतुलित आहार, जोड़ों की गर्मी, और जोड़ों की नियमित जाँच करवाना बहुत ज़रूरी है। समय पर डॉक्टर से संपर्क करें और सही, सटीक उपचार का पालन करें।

डॉ. राजीव भार्गव
मो. 9829015752

स्वास्थ्य क्रांति की ओर बढ़ रहा राजस्थान

फोर्टिस एस्कॉर्ट्स में राजस्थान का पहला 'AI थेरेपेटिक एंडोस्कोपी' विभाग शुरू

डॉ. श्याम सुंदर शर्मा

जयपुर। फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हॉस्पिटल, जयपुर ने राजस्थान का पहला आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और एडवांस्ड थेरेपेटिक जीआई एंडोस्कोपी विभाग शुरू करके राज्य के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र को नई दिशा दी है।

मुख्य अतिथि घनश्याम तिवाड़ी (सांसद, राज्यसभा) ने विभाग का शुभारंभ किया।

AI तकनीक : डॉक्टरों की 'तीसरी आंख'

यह नया विभाग गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल (पेट और आंतों) से जुड़ी बीमारियों के निदान के लिए अत्याधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर प्रदान करता है।

सटीक निदान : AI-पावर्ड एंडोस्कोपी तकनीक डॉक्टरों के लिए 'तीसरी आंख' की तरह काम करती है।

असामान्यताओं की पहचान : यह तकनीक उन छोटी-छोटी असामान्यताओं का भी पता लगा लेती है, जिन्हें पारंपरिक एंडोस्कोपी प्रक्रियाओं के दौरान पहचानना मुश्किल हो सकता है।

कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का शुरुआती इलाज

फोर्टिस के डायरेक्टर डॉ श्याम सुंदर शर्मा ने बताया कि AI एंडोस्कोपी पेट से जुड़ी बीमारियों के डायग्नोसिस में क्रांतिकारी बदलाव लाएगी।

शुरुआती पता : कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का शुरुआती चरण में ही पता लगाना संभव होगा।

गैर-सर्जिकल उपचार : कई मामलों में, बिना सर्जरी के ही एंडोस्कोपी के माध्यम से उनका इलाज करना मुमकिन हो जाता है, जिससे मरीजों को बड़ी राहत मिलती है।

इस अवसर पर डॉ. मनीष कुमार अग्रवाल, फैसिलिटी डायरेक्टर, फोर्टिस एस्कॉर्ट्स भी उपस्थित रहे।

सम्पर्क सूत्र :
डॉ श्याम सुंदर शर्मा
मो. +919829051359

एसएमएस अस्पताल की बड़ी उपलब्धि

रोबोटिक सर्जरी से दुर्लभ बीमारी का सफल इलाज

जयपुर के एसएमएस अस्पताल के जनरल सर्जरी विभाग के चिकित्सकों ने एक दुर्लभ बीमारी से जूझ रहे मरीज की सफलतापूर्वक रोबोटिक सर्जरी करके एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है।

डॉ. जीवन कांकरिया

बीमारी और उपचार

बीमारी का नाम: मरीज मीडियन आर्कुएट लिगामेंट सिंड्रोम (Median Arcuate Ligament Syndrome - MALS) नामक दुर्लभ बीमारी से पीड़ित था।

दुर्लभता : यह बीमारी एक लाख में से केवल एक रोगी में पाई जाती है।

चुनौतियाँ : मरीज पिछले सात वर्षों से पेट दर्द, भोजन के बाद तेज दर्द, भूख न लगना, घबराहट, और पाचन संबंधी परेशानियों से ग्रस्त था। उसे खाने के बाद दर्द होने और भोजन करने से डरने के कारण, उसका वजन 20 किलो कम हो गया था और हीमोग्लोबिन 5.8 ग्राम तक पहुंच गया था।

कारण : सीटी एंजियोग्राफी से पता चला कि मरीज की पाचन तंत्र को खून पहुँचाने वाली मुख्य धमनी 70 प्रतिशत ब्लॉक थी, जो जन्मजात शारीरिक संरचना में मौजूद कुछ मांसपेशियों के दबाव के कारण हो रहा था। दबाव से भोजन के बाद पर्याप्त रक्त सप्लाई नहीं हो पा रही थी।

सफलता : मरीज का उपचार अत्याधुनिक रोबोटिक सर्जरी और आईजीएल तकनीक से किया गया।

सफल सर्जरी करने वाले चिकित्सक

यह सफल ऑपरेशन सीनियर प्रोफेसर डॉ. जीवन कांकरिया और उनकी टीम ने किया। उनकी टीम में एनेस्थीसिया विभाग से डॉ. सुशील चौहान, डॉ. केचन, और डॉ. इंदु का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा।

सर्जरी के बाद सुधार

चिकित्सकों ने बताया कि सर्जरी के दो सप्ताह बाद मरीज सामान्य रूप से भोजन करने लगा है, उसका वजन बढ़ने लगा है, और दर्द पूरी तरह समाप्त हो चुका है।

सम्पर्क सूत्र डॉ. जीवन कांकरिया
मो. 931-405-7008

मधुमेह के इलाज में 'पेसमेकर जैसी' तकनीक

बायोइलेक्ट्रॉनिक क्रांति

पुणे की एक मेडिकल-डिवाइस कंपनी बायोरैड मेडिसिस एक ऐसी इम्प्लांटेबल डिवाइस (शरीर में लगाई जाने वाली) विकसित कर रही है, जो मधुमेह (डायबिटीज) के इलाज में एक 'पेसमेकर जैसी क्रांति' ला सकती है।

यह तकनीक कैसे काम करेगी?

लक्ष्य : शरीर की अपनी प्रणालियों को सक्रिय करके ग्लूकोज नियंत्रण करना। यह तकनीक पारंपरिक दवाओं या जटिल सर्जरी के बजाय बायोइलेक्ट्रॉनिक तकनीक को वेगस नर्व स्टिम्युलेशन (VNS) कहते हैं।

परिणाम : VNS रक्त शर्करा (ब्लड शुगर) के स्तर को नियंत्रित करने, इंसुलिन संवेदनशीलता में सुधार लाने और भूख को नियंत्रित करने में मदद कर सकती है।

एनिमल ट्रायल सफल, अब मानव परीक्षण की तैयारी

प्री-क्लीनिकल एनिमल ट्रायल ऑस्ट्रेलिया में पूरे हो चुके हैं, और अब भारत में भी परीक्षण शुरू होने वाले हैं।

कंपनी को उम्मीद है कि नियामक मंजूरी मिलने पर अगले साल के अंत तक मानव परीक्षण शुरू हो जाएगा।

यह डिवाइस ठीक उसी तरह रक्त ग्लूकोज को नियंत्रित करेगी, जैसे पेसमेकर हृदय की धड़कन को नियंत्रित करता है, इसलिए इसे मधुमेह के उपचार में एक महत्वपूर्ण, नई पीढ़ी की दवा-मुक्त व्यवस्था माना जा रहा है। यह नवाचार भविष्य में मधुमेह के उपचार के तरीके को मौलिक रूप से बदल सकता है।

आधुनिक लेजर नेत्र चिकित्सा में राज्य का गौरव
स्माईल लेसिक
चश्मा हटाने
का राज्य में एकमात्र स्थान
SMILE LASIK
बिना फ्लेप, बिना ब्लेड
लेजर द्वारा चश्मा हटाना
पतले कार्निया के लिए
भी अधिक सुरक्षित
VisuMax Laser
राज्य/केन्द्र सरकार कर्मचारियों, पेन्शनर्स एवं मेडिकल के लिए अधिकृत नेत्र चिकित्सालय
डॉ. वीरेन्द्र लेजर, फेको सर्जरी सेन्टर
टोंक फाटक, फोर्ड शोरूम के पीछे, टोंक रोड, गांधी नगर, जयपुर
मो. 9829017147, 9414043006 www.newsperfectvision.com

NEURO CARE HOSPITAL
& Research Center Pvt. Ltd.
Dr. NEMI CHAND POONIA
DIRECTOR
(MBBS, MS, Mch Neuro surgery
Vision of Excelence Mission to save Lives
न्यूरो एवं स्पाइन की विश्व स्तरीय अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधा
न्यूरो एंडोस्कोपी द्वारा मस्तिष्क एवं स्पाइन के ऑपरेशन की सुविधा
15 बेड का गहन चिकित्सा इकाई विश्व स्तरीय मॉड्यूलर ऑपरेशन थिएटर
नसों के रास्ते दिमाग की जटिल बीमारियों का इलाज
राजस्थान में प्रथम न्यूरो नेविगेशन सिस्टम के द्वारा ऑपरेशन की सुविधा
1/611 Sector 1, Vidhyadhar Nagar Jaipur
PH: 0141-2236712, 9983300286

एच. नारायण एक्युप्रैशर थेरेपी सेन्टर
जोड़ो का दर्द...
कैसा भी कही भी...
एक्युप्रैशर चिकित्सा में स्थायी उपचार
कमर दर्द
स्लिप डिस्क
गर्दन का दर्द
घुटनों का दर्द
सरदर्द माइग्रेन
नसों का दर्द
एड़ी का दर्द
We Also Have : Greentea Bags, Greentea Tablet, Greencoffe Cap, Greencoffe Garcenia Cambogia Cap, Alovera Juice, Amla Juice, Wheatgrass/Giloy Papaya, Extract Juice & Apple Cider Vinegar (Acupressure Therapy)
HEMANT NARAYAN (Acupressure Therapist) (D.A.T, MD, AC.U) 9782667618, 8619538045
चौधरी धर्मशाला के सामने वाला रास्ता, कुमावत कॉलोनी, वार्ड नं. 30, श्रीमाधोपुर (सीकर)

Dr. Goyal's
PATH LAB & IMAGING CENTRE
Dr. Piyush Goyal
MBBS, DMRD
Director & Chief Radiologist
• MRI (3 Tesla) • CT SCAN (32 Slice) • 3D/4D ULTRA
SONOGRAPHY • COLOUR DOPPLER • CTMT • 2D ECHO
• ECG • NCV • EEG • EMG • LABORATORY • DIGITAL X-RAY
B-51, Ganesh Nagar, Near Metro Pillar No. 109-110
New Sanganer Road, Sodala, Jaipur
Ph: 0141-2293346, 4049787, 9887049787

उपचार से बेहतर है रोकथाम, स्वस्थ शरीर के लिए व्यायाम

"विचार"

क्या है मंदिर की परिभाषा

पंकज अंबा

शायद अजीब लग रहा होगा कि भगवान मंदिर और पंडित क्यूं नहीं लिखा पर मुझे लगता है कि भगवान का नाम तो अब सरनेम हो गया, जैसे ढेर के बाला जी, खोले के हनुमान जी, पापड़ वाले हनुमान जी, मथुरा के बांके बिहारी आदि कितने नाम गिनवाउं।

मंदिर की परिभाषा जो हम लोगों को लगती है कि मंदिर परमात्मा का घर है जिसके कुछ नियम होंगे, जो बनाने पर लागू करने होते होंगे। पर आजकल तो मंदिर अच्छा होना चाहिए ताकि लोग कहे कि बड़ा चमत्कारी मंदिर है, चमक रहा है, पंडित जी को तो वसीयत नामा मिल गया। पीढ़ी दर पीढ़ी राज चलेगा। बेचारा भगवान जिसका खुद का घर बना मंदिर, वो तो पांच फुट की जगह लेके एक किनारे बैठा होगा। बिड़ला मंदिर जैसी जगह में तो ज्यादा सुंदरता का ध्यान दिया जाता है वहां का सिस्टम ही अलग है, प्रशाद मिलता है, पंडितो को तन्खाह मिलती है, सब कुछ ऑफिस की तरह चलता है।

उनके मंदिर घुमने और शादी के लिए लड़का-लड़की दिखाने की जगह बन गए है। कुछ प्रश्न मेरे मन में बार-बार आते है पर डर लगता है कि पूछने पर आप लोग मुझे नास्तिक न समझ लें, पर मेरे एक लेख

भविष्यवाणी में मैं लिख चुका हूं, जब तक उत्तर ना मिल प्रश्न प्रश्न ही रहता है, चाहे वो मन में दबा रहे। मंदिर का मतलब है मालिक का घर, जहां अंदर आने पर मन अपने आप साफ होने लगता है,इसके लिए कई नियम भी बने है कुछ दिन पहले मैं वैष्णों देवी मंदिर गया था, वहां अंदर आने से पहले तलाशी ली जाती है, मेरी जेब में लाइटर था, निकाल लिया गया, पर जेब से कंघी भी निकाल ली गई, बात समझ में नहीं आई, सब मंदिरों के अपने नियम है, गणेश जी, हनुमान जी के लड्डू चढ़ेंगे, कृष्ण जी के मंदिर में पेड़े, मोहिंदपुर के बाला जी का प्रशाद घर नहीं ले जाना। पर कुछ नियम सब मंदिरों में समान है, जैसे जूते चप्पल पहन कर मंदिर में नहीं जाना, सही बात है। अपने घर में भी जूते बाहर ही उतारे जाते है, वो तो मालिक का घर है। परिसर में तंबाकू-बीड़ी-सिगरेट का सेवन मना है, समझ में आता है कि बूरी चीज है, चमड़ा पर्स बेल्ट नहीं ले जाना यह समझ से बाहर है। जिंदा चमड़ी तो अंदर जा रही है और मरी चमड़ी को बाहर रोक दिया। कारण पता नहीं, अगर मंदिर की परिभाषा में ये सब आता है तो आमेर के मंदिर जैसे और भी कई मंदिर है जहां शराब का भोग लगता है। तो क्या वो मंदिर नहीं, या मैं मानू कि मंदिर भी दो तरह के है। वेज और नोन वेज। मंदिर की दिवारों पर कई कथाएं और श्लोक लिखे होते है कि जीव हत्या पाप है पर मंदिरों में बलि भी चढ़ाई जाए यह समझ से बाहर है।

संपर्क सूत्र-पंकज अंबा मो. 9829353757

छोटी लापरवाही से बिगड़ती सेहत : जानिए डॉ राजेंद्र धर का जीवनशैली मंत्र

डॉ. राजेन्द्र धर

निम्स मेडिकल कॉलेज के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. राजेंद्र धर ने दैनिक जीवन में अक्सर अनदेखी की जाने वाली छोटी-छोटी बातों पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी है, जो स्वस्थ जीवन की कुंजी बन सकती हैं। उनका मानना है कि हल्का सा दर्द भी अगर नजरअंदाज किया जाए तो आगे चलकर गंभीर रूप ले सकता है, जबकि कुछ साधारण उपाय हमें दर्द मुक्त और आरामदायक जिंदगी दे सकते हैं।

डॉ. राजेंद्र धर के अनुसार, 100 ग्राम कैलोरी अतिरिक्त हर दिन लेने से व्यक्ति का वजन एक साल में एक किलोग्राम बढ़ सकता है। इसलिए, खान-पान में सचेत रहना जरूरी है। साथ ही, प्रतिदिन एक ही जूते इस्तेमाल करने से शरीर में खिंचाव हो सकता है।

हृदय और मस्तिष्क की सुरक्षा - धूम्रपान छोड़ने पर होने वाली शुरुआती परेशानी (विथड्रावल) को नज़रअंदाज़ न करने की चेतावनी देते हुए, उन्होंने इसे बहुत बड़ा कदम बताया है। हृदय

स्वास्थ्य के लिए, डॉ. राजेंद्र धर ने शाकाहारी भोजन को प्राथमिकता देने की सलाह दी है, जिसमें फल, मेवे, और सब्जियां शामिल हैं। उन्होंने कहा कि ये न सिर्फ़ हृदय को सुरक्षित रखते हैं, बल्कि ब्लड प्रेशर और हार्मोन्स को भी संतुलित रखते हैं।

एक महत्वपूर्ण सलाह यह भी है कि यदि आप ट्रेन या बस से सफ़र कर रहे हैं, तो अपने सामान को सही ढंग से रखें ताकि अनावश्यक खिंचाव से बचा जा सके। पीठ दर्द से बचने के लिए बैठने के बाद कुछ सेकंड इंतज़ार करने और हड्डी से बचने की सलाह दी है, क्योंकि यह पीठ में खिंचाव पैदा कर सकता है। मस्तिष्क को आराम देने के लिए, कम से कम एक बार आराम करना अत्यंत आवश्यक है।

सम्पर्क सूत्र : डॉ राजेंद्र धर मो 9414073962

SONOBELIA 2025
Date - December 19th to 21st, 2025
Venue - The Nest Resort, near Bagru Toll Plaza, Ajmer Road, Jaipur, Rajasthan
Contact - Dr Dinesh P Singh, Dr Deo Prakash Singh, Dr Manoj Kumar Jain
Mob - 9414460959
Theme
International Conference on Ultrasound Imaging

दादी मां के नुस्खे

सहारा आयुर्वेदिक सेंटर के डॉ. अशोक शर्मा का कहना है कि मानव शरीर के रोगोपचार में कई बार घरेलू नुस्खे बहुत कारगर होते हैं।

सर्दी और प्रदूषण से बचाव के उपाय

सर्दी और प्रदूषण के दोहरे वार से बचने के लिए ये उपाय और घरेलू नुस्खे अपनाएँ:

बचाव की सावधानियाँ - मास्क पहनें: घर से बाहर निकलते समय N95 मास्क का उपयोग करें, खासकर जब AQI (Air Quality Index) खराब हो।

धुंध में टहलने से बचें: सुबह-सवेरे जब प्रदूषण का स्तर और ठंड सबसे ज्यादा हो।

घर के अंदर एयर प्यूरीफायर का इस्तेमाल करें या तुलसी, स्नेक प्लांट जैसे वायु शुद्ध करने वाले पौधे लगाएं।

सफाई: घर में झाड़ू या डस्टिंग की जगह वैक्यूम क्लीनर का इस्तेमाल करें, ताकि धूल के कण न उड़ें।

असरदार घरेलू नुस्खे - भाप (स्टीम) लें: रोज़ाना 5 से 10 मिनट के लिए गुनगुने पानी की भाप लें। यह फेफड़ों में जमा बलगम को ढीला कर श्वास नली की सूजन कम करता है।

तुलसी-अदरक का काढ़ा: तुलसी, अदरक, काली मिर्च और शहद मिलाकर काढ़ा बनाएं। यह प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है और गले की खराश में राहत देता है।

हल्दी वाला दूध: रात को सोने से पहले हल्दी वाला गर्म दूध पीने से सूजन कम होती है और यह एंटीऑक्सीडेंट की तरह काम करता है।

संपर्क: डॉ. अशोक कुमार शर्मा मो. 9314512311

उपरोक्त नुस्खे चिकित्सक की सलाह से ही लें।

ESIC मेडिकल कॉलेज में हुआ पहला देहदानः एक प्रेरणादायक पहल

मेडिकल कॉलेजों में नियमों में सरलता और बढ़ती जागरूकता के कारण देहदान का ग्राफ तेज़ी से ऊपर जा रहा है। इसी कड़ी में, जयपुर की दिवंगत श्रीमती कानन गोलेच्छा के परिवार ने एक महान और प्रेरणादायी कदम उठाया है।

मंगलवार को, देवीपथ, तख्तेशाही रोड, जयपुर निवासी डॉ. प्रकाश गोलेच्छा की पत्नी श्रीमती कानन गोलेच्छा की दुखद मृत्यु के पश्चात, उनके परिवारजनों ने ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज के एनाटॉमी विभाग को उनका देहदान कर दिया।

यह देहदान इस कॉलेज में हुआ पहला देहदान है, जो शिक्षा और मानवता के लिए एक नई राह खोलता है। यह कदम न केवल चिकित्सा छात्रों के लिए अमूल्य है, बल्कि समाज को

भी जीवन की क्षणभंगुरता के बाद भी 'जीने' का एक अद्भुत संदेश देता है।

इस पुण्य अवसर पर जैन सोशल ग्रुप सेंट्रल के संस्थापक अध्यक्ष कमल संचेती, अधीक्षक डॉ. आरपी मीणा, डीन डॉ. राजेश चेतीवाल, डॉ. सचेंद्र मित्तल समेत कई अन्य डॉक्टर और गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

श्रीमती कानन गोलेच्छा का यह अंतिम दान हमें सिखाता है कि हम अपने जीवन को केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज की भलाई के लिए कैसे समर्पित कर सकते हैं।

सूर्या हॉस्पिटल में प्री-मैच्योरिटी-डे पर प्रेरणादायक समारोह
23 से 26 हफ़्ते में जन्मे बच्चे अब पूरी तरह स्वस्थ!

जयपुर स्थित सूर्या हॉस्पिटल में रविवार को 'प्री-मैच्योरिटी डे' पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें लगभग 32 प्रीमैच्योर शिशु अपने माता-पिता के साथ शामिल हुए, जो अब एक स्वस्थ जीवन जी रहे हैं।

उद्देश्य: इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समय से पहले जन्मे इन बच्चों की संघर्षपूर्ण शुरुआत को सम्मान देना और उनके परिवारों को एक सकारात्मक मंच प्रदान करना था।

विशेषज्ञों की राय: नियोनेटोलॉजी विशेषज्ञ डॉ. आकाश शर्मा और डॉ. राकेश कुमावत ने बताया कि 23-26 हफ़्ते में जन्मे कई शिशु अब पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं।

अस्पताल की प्रतिबद्धता: यूनिट एवं फैसिलिटी डायरेक्टर कर्नल मनन मुकुल ने उच्च गुणवत्ता वाली मातृ एवं नवजात सेवाओं की निरंतर प्रतिबद्धता को दोहराया। कार्यक्रम की झलकियों: फ़न गेम्स और क्रिएटिव एक्टिविटीज ने इस कार्यक्रम को और भी अधिक रोचक और यादगार बनाया।

यह कहानी जीवन के संघर्ष और चिकित्सा की सफलता को दर्शाती है।

आयुष्मान बाल संबल योजनाः आयु सीमा की अनिवार्यता समाप्त, मस्कुलर डिस्ट्रॉफी के 18+ मरीज़ों को भी मिलेगा लाभ!

जोधपुर : मुख्यमंत्री (फ्रस्) आयुष्मान बाल संबल योजना में अब एक बदलाव किया गया है।

बदलाव की मुख्य बातें - क्या बदला : योजना का लाभ जो पहले केवल 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को मिलता था, अब सभी आयु वर्ग के नागरिकों/मरीजों पर लागू होगा।

किन्हें लाभ : मस्कुलर डिस्ट्रॉफी और रेयर डिजीज से पीड़ित 18 वर्ष से अधिक आयु वाले मरीज़ों को अब इस योजना का फायदा मिल सकेगा।

कोर्ट के हस्तक्षेप से मिली राहत- यह महत्वपूर्ण फैसला राजस्थान हाईकोर्ट के हस्तक्षेप के बाद आया है। वर्ष 2021 में, मस्कुलर डिस्ट्रॉफी से जुड़ी स्वावलंबन संस्था ने बीमारी से पीड़ित मरीज़ों के लिए गुहार लगाते हुए

एक याचिका दायर की थी। जस्टिस पुष्पेंद्र सिंह भाटी की बेंच ने जस्टिस भाटी ने फैसला सुनाते हुए कहा कि अगले आदेश तक मुख्यमंत्री आयुष्मान बाल संबल योजना 2024 के क्लॉज 5 की शर्त -1 को सभी उम्र के सभी नागरिकों-मरीजों पर लागू माना जाएगा।

ब्लड बैंक की लापरवाही ने ली 8 मरीजों की जान

दरभंगा मेडिकल कॉलेज और अस्पताल (डीएमसीएच) के ब्लड बैंक में मरीजों की जान के साथ खिलवाड़ करने मामला सामने आया है। ब्लड बैंक की लापरवाही के कारण बीते दो सप्ताह में 8 मरीजों की जान चली गई है। यह आरोप खुद वहां काम कर रहे डॉक्टर ने लगाया है। मामला सामने आते ही अस्पताल प्रबंधन ने पुरे मामले की जांच का आदेश दे दिया है।

राजस्थान के इस जिले में अचानक बढ़ी एड्स के मरीजों की संख्या

भरतपुर जिले में एड्स के मरीजों की बढ़ती संख्या ने स्वास्थ्य विभाग और आम लोगों को चौंका दिया है। सबसे खतरनाक तथ्य यह है कि इस जानलेवा बीमारी की चपेट में सबसे ज्यादा युवा आ रहे हैं। खास बात यह है कि 30 वर्ष तक की उम्र में ही 1191 मरीज सामने आना इस बात का संकेत है कि स्थिति कहीं अधिक गंभीर है, जितना सोचा जा रहा है।वर्ष 2013 के फरवरी माह में शुरू हुए आरबीएम अस्पताल के एआरटी सेंटर में अक्टूबर 2025 तक कुल 3334 पंजीकृत एड्स रोगी हैं।

इनमें 1803 पुरुष, 1344 महिलाएं और 4 ट्रांसजेंडर शामिल हैं। चिंताजनक बात यह है कि 15 वर्ष तक के 179 बच्चे भी संक्रमित हैं। इनमें 114 लड़के और 65 लड़कियां शामिल हैं, लेकिन सबसे

बड़ा झटका 30 साल तक के मरीजों की संख्या से लगता है। इस आयु वर्ग में 1191 संक्रमित मरीज हैं, जिनमें 601 पुरुष, 589 महिलाएं और 1 ट्रांसजेंडर शामिल है। वहीं 30 साल से अधिक उम्र के 2143 मरीज दर्ज हैं। कुल मिलाकर आंकड़े साफ दिखाते हैं कि युवाओं में संक्रमण की रफ्तार सबसे ज्यादा है।

यह बढ़ता खतरा आखिर क्यों? - एड्स को लेकर जागरूकता फैलाने के प्रशासन के प्रयासों के बावजूद युवा तेजी से संक्रमित हो रहे हैं। विशेषज्ञ इसे सामाजिक झिझक, समय पर जांच न कराना, असुरक्षित व्यवहार और गलत धारणाओं की वजह मान रहे हैं। लोग अभी भी लक्षणों की अनदेखी कर देते हैं और कई संक्रमितों को वर्षों तक पता ही नहीं चलता कि वे एचआइवी पॉजिटिव हैं।

आप भी खाते हैं घर में रखी ये मशहूर दवाई? अब मत खाना, सरकार ने कैंसर की चेतावनी जारी की ।

कई बार होता है कि हम लोग छोटी-मोटी बीमारी में अपने घर पर रखी दवाइयों का इस्तेमाल कर लेते हैं. लेकिन कम लोग ही जानते हैं कि ऐसा करना कितना खतरनाक है. घर पर रखी कोई भी दवाई किसी भी समय खाना खतरे से खाली नहीं, किसी भी तरह की दवाई का इस्तेमाल करने से पहले डॉक्टर या एक्सपर्ट्स की राय लेना आवश्यक है। हाल ही में सरकार ने एसिडिटी और गैस की बीमारी के लिए मशहूर रैनिटिडिन को लेकर चेतावनी जारी की है । केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने रैनिटिडिन दवाई को लेकर सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को निर्देश जारी किया है कि इस दवा को बनाने वाली कंपनियों से रैनिटिडिन में NDMA की निगरानी करवाएं। सरकार ने इस दवाई के अंदर कैंसरकारक तत्व होने की आशंका जताई है। NDMA एक संभावित कैंसरकारक तत्व है जिसकी मौजूदगी को लेकर पिछले कुछ वर्षों से चिंता जताई जा रही है।

किसने जारी किया निर्देश?- यह निर्देश ड्रग्स कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया डॉ राजीव सिंह रघुवंशी ने जारी किया है। यह फैसला 28 अप्रैल 2025 को हुई ड्रग्स टेक्निकल एडवाइजरी बोर्ड की 92वीं बैठक के बाद लिया गया, जिसमें एक एक्सपर्ट कमेटी की रिपोर्ट की समीक्षा की गई। यह कमेटी दिसंबर 2024 में हुई थी से जुड़ी चिंताओं की जांच के लिए बनाई गई थी।

Add Zee News as a Preferred Source ICMR **को दी बड़ी दिम्मेदारी** - DTAB ने सुझाव दिया है कि ICMR की मौजूदगी को लेकर एक बड़ी कमेटी बनाई जाए, जो इसके हर पहलू की जांच करे, जिसमें भंडारण की स्थिति भी शामिल है, क्योंकि यही तत्व ICMR बनने की संभावना बढ़ा सकते हैं। इसके साथ ही बोर्ड ने यह भी सिफारिश की है कि इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (ICMR) रैनिटिडिन की लंबी अवधि की सुरक्षा पर गहराई से रिसर्च करे।

NDMA हो सकता है कैंसर कारक - निर्माताओं को निर्देश दिया गया है कि वे जोखिम के आधार पर उपाय अपनाएं जैसे शेल्फ लाइफ को सीमित करना, स्टोरेज के नियमों को संशोधित करना और ICMR की टेस्टिंग प्रक्रिया को सप्लाई चेन में बेहतर बनाना। AIIMS दिल्ली के ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ. अभिषेक शंकर ने NDMA को एक संभावित कैंसरकारक बताया और कहा कि जब फेमोटिडिन और पैंटोप्राजोल जैसी सुरक्षित दवाएं उपलब्ध हैं, तो रैनिटिडिन को जारी नहीं रखना चाहिए।

डॉक्टर की सलाह जरूरी - बता दें कि NDMA की मौजूदगी की वजह से रैनिटिडिन पहले ही अमेरिका समेत कई देशों में प्रतिबंधित की जा चुकी है। ऐसे में भारत में इस पर फिर से निगरानी बढ़ाना सरकार का एहतियाती कदम माना जा रहा है। एक्सपर्ट्स की सलाह है कि अगर कोई व्यक्ति रैनिटिडिन ले रहा है, तो उसे अपने डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए और सुरक्षित विकल्पों पर विचार करना चाहिए।

FAQ पेट में गैस होने पर क्या खाएं ? - पेट में गैस होने पर सौंफ, जीरा, अजवाइन, पुदीना, और हींग जैसी कुदरती चीजें खा सकते हैं। किसी भी दवाई का इस्तेमाल तब तक न करें जब तक कि आपको डॉक्टर खाने की सलाह न दे।

पेट में गैस क्यों बनती है ? - पेट में गैस बनने का मुख्य कारण पाचन तंत्र में हवा या गैस के जमा होना होता है। जल्दी-जल्दी खाने, पीने, चबाने वाली गम, या धूम्रपान करने से भी हवा पेट में जा सकती है। आप भी खाते हैं घर में रखी ये मशहूर दवाई? अब मत खाना, सरकार ने कैंसर की चेतावनी जारी कर दी।

कई बार होता है कि हम लोग छोटी-मोटी बीमारी में अपने घर पर रखी दवाइयों का इस्तेमाल कर लेते हैं। लेकिन कम लोग ही जानते हैं कि ऐसा करना कितना खतरनाक है। घर पर रखी कोई भी दवाई किसी भी समय खाना खतरे से खाली नहीं, किसी भी तरह की दवाई का इस्तेमाल करने से पहले डॉक्टर या एक्सपर्ट्स की राय लेने आवश्यक है। हाल ही में सरकार ने एसिडिटी और गैस की बीमारी के लिए मशहूर रैनिटिडिन को लेकर चेतावनी जारी की है। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने रैनिटिडिन दवाई को लेकर सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को निर्देश जारी किया है कि इस दवा को बनाने वाली कंपनियों से रैनिटिडिन में NDMA की निगरानी करवाएं। सरकार ने इस दवाई के अंदर कैंसरकारक तत्व होने की आशंका जताई है। ICMR एक संभावित कैंसरकारक तत्व है जिसकी मौजूदगी को लेकर पिछले कुछ वर्षों से चिंता जताई जा रही है।

किसने जारी किया निर्देश ? - यह निर्देश ड्रग्स कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया डॉ राजीव सिंह रघुवंशी ने जारी किया है। यह फैसला 28 अप्रैल 2025 को हुई ड्रग्स टेक्निकल एडवाइजरी बोर्ड (ICMR) की 92वीं बैठक के बाद लिया गया, जिसमें एक एक्सपर्ट कमेटी की रिपोर्ट की समीक्षा की गई। यह कमेटी दिसंबर 2024 में ICMR से जुड़ी चिंताओं की जांच के लिए बनाई गई थी।

Add Zee News as a Preferred Source ICMR को दी बड़ी दिम्मेदारी DTAB ने सुझाव दिया है कि NDMA की मौजूदगी को लेकर एक बड़ी कमेटी बनाई जाए ।

हैल्थ हंगामा

डॉक्टर (मरीज से) तुम्हारा दांत निकालना पड़ेगा।
मरीज : कितने पैसे लगेंगे?
डॉक्टर 200 रुपए।
मरीज : यह लो
50 रुपए...
ढीला कर देना, निकाल मैं खुद लूंगा।
....
भगवान और डॉक्टर को कभी नाराज मत करना!
क्योंकि भगवान नाराज तो आप डॉक्टर के पास और डॉक्टर नाराज तो आप भगवान के पास।
....
डॉक्टर कहता है सुबह जल्दी उठने से उम्र बढ़ती है।
मुर्गा जल्दी उठता है और शाम तक शहीद हो जाता है।
वहम से बचो आराम से उठो।
....
डॉक्टर - मरीज से मेरे पास आने से पहले आपने किसी और डॉक्टर से सलाह ली थी क्या?
मरीज : जी, गली के नुक्कड़ पर जो छोटा सा दवाखाना है, वहां के डॉक्टर को दिखाया था...
डॉक्टर : उस झोलाछाप ने जरूर कोई बेवकूफी भरी सलाह दी होगी? ....
मरीज : जी, उन्होंने कहा था कि मैं जाकर आपको दिखाऊं...!!!

Fixed Teeth only in 1 Hour
Dr. Preeti Mittal
ORAL DENTAL SURGEON
105, vrindavan vihar colony King s Road Nirman Nagar Jaipur
Mo: 9829460460

H.N. NURSING HOME
चूरू क्षेत्र का एक विश्वसनीय केन्द्र
DR. MUMTAJ ALI
Churu- Rajsthan
Mob. 9414084525
Ph: 250763

सूचना
हैल्थ व्यू में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने विचार हैं और केवल आपकी जानकारी के लिए है कोई भी लेख पर अमल करने से पूर्व अपने चिकित्सक से परामर्श अवश्य कर लें। हैल्थ व्यू के सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
THE EDITTORIAL BOARD DOES NOT ENDORSE ANY PRODUCTS ADVERTISED IN THIS NEWSPAPER.
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र केवल जयपुर होगा।

प्रत्येक अंतिम शनिवार को निःशुल्क एक्युप्रेशर व रेकी चिकित्सा जिसमें शारीरिक, मानसिक व कर्म से संबंधी रोगों का उपचार होगा।
संपर्क सूत्र
आकृति क्लिनिक
डॉ. पमिला छाबड़ा
मो. : 9829735666
रेकी व एक्युप्रेशर प्रशिक्षण हेतु संपर्क करें

LIFE SAVER
A SHOP OF LIFE SAVING DRUGS
STOCKISTS FOR
Cancer & Cardiac Medicines, Disposable Surgery Items Nutrition Fluids
168, Nehru Bazar, JAIPUR
Tel№ 2313129, 2310483, 2313281, Mob№ 98290-14267
DELIVERY FACILITY AVAILABLE

MAHAVEER DIAGNOSTIC
Super Speciality Lab
Thyroid • Harmones • Tumour Markers • Infertility/ Pregnency Hormones • Torch • Metabolic Hormones • Druf Assays
Dr. Manoj Jain
Mob. 94144-60959
ECHO & COLOR DOPPLER CENTRE
Whole Body Color Doppler Study, 2 D Echo- Adult & Paediatric, Carotid Doppler, Peripheral & Renal Doppler, Small Parts - Penile Doppler, Fetal Doppler & Echo
Manav Ashram, Gopalpura Mod, Jaipur Ph: 2704787

क्या सभी वर्गों के लिए होनी चाहिए मुफ्त की सुविधा

संपादकीय

एक तरफ सरकार ने राजस्व की प्राप्ति के लिए स्लैब बनाए हुए हैं और उसी अनुसार उनसे टैक्स वसूला जाता है तो फिर चुनावी फायदे के लिए सभी वर्ग के लिए मुफ्त का चंदन घिस मेरे नंदन क्यों ! जनकल्याणकारी योजनाओं के नाम पर बंदरबांट क्यों आमद अठन्नी खर्चा रुपैया कमाई के साधन सीमित और खर्च ज्यादा हो जाएंगे तो सरकार को भी कर्ज लेना पड़ जाएगा। राजकीय सत्ता में जो भी पार्टी हो , चुनावी रण में जनता के बीच जाने से पहले उसे जीत का रास्ता लोकलुभावन जनहित की घोषणाओं में ही नजर आता है। चाहे वह पूरी हो सके या नहीं , बाद में देखा जाएगा। एक बार सत्ता तो झोली में आए। मुफ्त, रियायतों की योजनाओं का ढोल पीट रही पार्टियां इसका ज्वलंत उदाहरण है। सरकार द्वारा चुनावी फायदे वाली स्कीमों को चलाने के लिए कर्मचारियों अधिकारियों और ठेकेदारों का भुगतान रोका जा रहा है। क्या सभी श्रेणियां को मुफ्त में सुविधा चाहिए ? क्या उच्च वर्ग जो लाखों करोड़ों रुपए का टैक्स देता है उसको भी निशुल्क चिकित्सा शिक्षा बिजली पानी आदि चाहिए ? विषय सोचने का है कि वोट के लिए लुभावने ऑफर दिए जा रहे हैं। चिकित्सक वर्ग कहता है कि धनाढ्य वर्ग का व्यक्ति जो पैसा खर्च कर इलाज लेता था आज वह भी कहने लग गया है कि चिरंजीवी योजना के तहत इलाज करो मुफ्त इलाज करो। क्या यह है सरकार पर अतिरिक्त बोझ नहीं होगा ? विषय सोचने योग्य है

क्या इसके दुष्परिणाम भविष्य में जनता को नहीं भुगतने पड़ेंगे? यह बात सही है कि गरीब और अभावग्रस्त लोगों की आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा का प्रबंध करना सरकार का दायित्व है। लेकिन, वोट के लिए सभी को मुफ्त की योजनाओं का लाभ देने लगें तो इसे बंदरबांट ही कहा जाएगा।

मुफ्त का चंदन घिस मेरे नंदन मुफ्तखोरी और जनकल्याण की योजनाओं में बारीक अंतर है। जनकल्याण की योजनाओं का दीर्घकालिक और सकारात्मक प्रभाव होता है। लोगों के जीवनस्तर में सुधार के साथ संसाधनों का विकास होता है।

बायोइलेक्ट्रॉनिक मधुमेह डिवाइस

पुणे स्थित कंपनी बायोरैड मेडिसिस (Biorad Medisys) अपनी इम्प्लांटेबल डिवाइस (जो वेगस नर्व स्टिम्युलेशन का उपयोग करती है) के साथ मधुमेह और मोटापे (Obesity) के प्रबंधन में एक संभावित गेम-चेंजर बनने की राह पर है।

कंपनी का विस्तार और अधिग्रहण : कंपनी ने हाल ही में अमेरिकी फर्म रीशेप लाइफसाइंसेज (ReShape Lifesciences) के कुछ महत्वपूर्ण एसेट्स (परिसंपत्तियों) का अधिग्रहण किया है। यह कदम बायोरैड की वैश्विक उपस्थिति और डिवाइस पोर्टफोलियो को मजबूत करेगा।

निवेश और विकास : बायोरैड मेडिसिस ने अपने ऋण चुकाने और पूंजीगत व्यय (Capital E&penditure) को समर्थन देने के लिए ?350 करोड़ जुटाए हैं।

विनिर्माण क्षमता में वृद्धि : कंपनी बेंगलुरु और शिरवल (पुणे) में दो नई ग्रीनफील्ड सुविधाओं की स्थापना कर रही है।

मानव परीक्षण की योजना (Human Trials): यह इम्प्लांट डिवाइस, जो पेसमेकर की तरह शरीर के अंदर काम करेगी, रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने, भूख को कम करने और इंसुलिन संवेदनशीलता में सुधार करने में मदद करती है।

कंपनी के प्रबंध निदेशक के अनुसार, यह नवाचार एंटी-डायबिटिक दवाओं, विशेष रूप से GLP-1 दवाओं, का एक प्राकृतिक विकल्प बन सकता है, क्योंकि यह रसायनों के बजाय शरीर के प्राकृतिक अंगों को उत्तेजित करके इंसुलिन संतुलन बनाए रखने में मदद करेगा।

निष्कर्ष : बायोरैड मेडिसिस केवल एक नई डिवाइस नहीं बना रही है, बल्कि वह भारत और दुनिया भर में न्यूरोमेटाबॉलिक चिकित्सा के माध्यम से मधुमेह के इलाज के तरीके को बदल रही है।

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया।

सोच बदलनी होगी यह कहावत शाश्वत सत्य है। सभी सुखी हों सभी रोग मुक्त रहें हम सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बने और किसी को भी दुख का भागी न बनना पड़े।

श्रृंखला 83

सोच बदलनी होगी

डॉ मान सिंह भांवरिया

शांति शांति शांति

इसका उच्चारण करके देखो कितनी शांति प्राप्त होगी। आज हम इस मुहावरे के अनुसार आपको जीवन जीने के तरीके के बारे में बताएंगे। हम जिस आपाधापी और भागदौड़ वाली जिंदगी में जीवन यापन कर रहे हैं सोच बदलनी होगी। कुछ बिंदुओं के द्वारा हमने जीवन को सही मार्ग पर लाने के लिए समझाने की कोशिश की है।

बदलती सोच और बढ़ता लेट मैरिज व लिव-इन का प्रचलन

आज के समाज में लेट मैरिज का चलन तेजी से बढ़ रहा है। राजस्थान पत्रिका में प्रकाशित वैवाहिक विज्ञापनों में जहां 100 लड़कों ने विवाह हेतु विज्ञापन दिए, वहीं केवल 25 लड़कियों के विज्ञापन सामने आए। यह नहीं देखा जा रहा। युवाओं में यह धारणा बढ़ रही है कि पहले स्थिरता और सफलता हासिल की जाए, उसके बाद ही विवाह जैसी जिम्मेदारी निभाई जाए। इसी के साथ लिव-इन रिलेशनशिप का प्रचलन भी तेजी से बढ़ रहा है। हालांकि यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता का विकल्प माना जाता है, लेकिन सामाजिक और पारिवारिक दृष्टिकोण से यह चिंता का

बदलता संतुलन सामाजिक सोच में आए बड़े परिवर्तन का संकेत देता है। करियर, स्वतंत्रता और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के कारण विवाह अब जीवन की प्राथमिक आवश्यकता के रूप में विषय बनता जा रहा है। लिव-इन संबंधों में जहां दो व्यक्ति एक साथ रहते हैं, वहीं परिवार और रिश्तों की भूमिका धीरे-धीरे कम होती जाती है। माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-मामा-सभी रिश्तों का महत्व घटने लगता है। इससे पारिवारिक ताने-बाने पर भी असर पड़ता है।

युवा पीढ़ी को यह समझना होगा कि आधुनिकता और स्वतंत्रता का अर्थ परिवार और संस्कारों से दूरी बनाना नहीं होता। परिवार हमारी पहचान, सुरक्षा और भावनात्मक आधार का मूल है। रिश्तों का महत्व और उनकी गरिमा बनाए रखना ही स्वस्थ और संतुलित समाज की नींव है।

समय के साथ सोच बदलना आवश्यक है–लेकिन बदलाव सकारात्मक हो, ऐसा प्रयास युवाओं को स्वयं करना होगा।

संपर्क सूत्र
डॉ. मान सिंह भांवरिया
मो. 9672777737

औषधि नियंत्रण आयुक्तालय द्वारा जारी ड्रग अलर्ट, दवाएं अमानक

औषधि नियंत्रण आयुक्तालय ने एक ड्रग अलर्ट जारी किया है, जिसमें फंगल, दर्दनाशक, एंटीबायोटिक और एंटीफंगल सहित छह दवाइयों को परीक्षण में मानक गुणवत्ता के अनुरूप नहीं पाया गया है।

असफल दवाइयों का विवरण

क्र.सं. दवाई का नाम (बैच/निर्माण तिथि/एक्सपायरी) निर्माता परीक्षण परिणाम

पैरासिटामोल टेबलेट आईपी 650 एमजी (बैच: 1725-230, एक्सपायरी: 09/2027) मै. लैबोरेटरीज लिमिटेड, पोंटा साहिब मानक पर नहीं पाया गया।

सल्फाडाइजीन टेबलेट्स आईपी (Sulfadiazine Tablets IP) (500 एमजी) (बैच: एलडीटी/250305सी, एक्सपायरी: 04/2027) मै. स्काइवॉक फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड, राजपुर, हिमाचल प्रदेश मानक पर नहीं पाया गया।

लेवोफ्लॉक्सासिन टेबलेट्स आईपी (Levoflo&acin Tablets IP) (500 एमजी) (बैच: वीकेएफ/कैप/650, एक्सपायरी: 09/2027) मै. विवेक फार्माकेम (इंडिया) लिमिटेड डीजीसीओ टेस्ट में परिणाम मानक पर खरे नहीं उतरे।

सल्फाडाइजीन टेबलेट्स आईपी (Sulfadiazine

Tablets IP) (बैच: टी24 बी554 ए, एक्सपायरी: 10/2026) मै. बजाज फार्मास्युटिकल्स, हरिद्वार (उत्तराखंड) नमूना मानक के दायरे में मानक गुणवत्ता नहीं पाया गया।

रेमिफोल-मेथाइलकोबालामिन टेबलेट्स (Remifol-M 25/25) (बैच: जीपी/010644, एक्सपायरी: 12/2026) मै. वेव लाइफकेयर प्राइवेट लिमिटेड, देहरादून (उत्तराखंड) एस्से और डिसॉल्यूशन दोनों परीक्षणों में असफल।

रेमिफोल टेबलेट्स आईपी (Remifol Tablets IP) 2.5 एमजी (कडलिन 2.5) (बैच: एसडीई-1457, एक्सपायरी: जून 2027) मै. विना-रिलीव ब्रॉडवेलिक्स प्राइवेट लिमिटेड, सोलन (हिमाचल प्रदेश)

आयुक्तालय ने सभी बैचों को बाजार से हटाने और उपभोक्ताओं को इन दवाओं के इस्तेमाल से बचने के निर्देश दिए हैं। इन दवाओं की गुणवत्ता की जांच प्रयोगशाला में की गई, जिसमें ये दवाएं निर्धारित मानदंडों पर खरी नहीं उतरीं।

एंटीबायोटिक के अंधाधुंध इस्तेमाल से 'सुपरबग्स' जैसी खतरनाक स्थिति

किसी भी बीमारी के लिए रोग प्रतिरोधक दवाएं (एंटीबायोटिक) बहुत कारगर मानी जाती हैं, यही वजह है कि बाजार में ये दवाएं सबसे ज्यादा बिकती हैं। हालांकि, इनके अंधाधुंध इस्तेमाल से देश में 'सुपरबग्स' जैसी खतरनाक स्थिति पैदा हो गई है, जहां दवाएं बेअसर हो जाती हैं और सामान्य बीमारी भी जल्दी ठीक नहीं हो पाती है। चिंता की बात यह है कि मुर्गी पालन और पशुपालन में भी रोग प्रतिरोधी दवाओं का अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है। नतीजतन, अगर हम खुद रोग प्रतिरोधी दवाएं कम लें, तो भी यह समस्या दूसरे रूप में हमें घेरे रहेगी। इसलिए सरकार की ओर से इन दवाओं के इस्तेमाल को लेकर विस्तृत दिशानिर्देश जारी किए गए हैं।

अब यह समस्या और बड़ी बनने लगी है, क्योंकि भारत जैसे देशों में बिना चिकित्सक की सलाह के रोग प्रतिरोधी दवाएं लेना, अधूरा दवा लेना और छोटी-मोटी बीमारी में भी इनका इस्तेमाल करना आम बात हो गई है। इन दवाओं के ज्यादा इस्तेमाल से हमारे शरीर में जीवाणु या विषाणु दवाइयों के प्रति प्रतिरोध विकसित कर लेते हैं और यह स्थिति 'सुपरबग्स' के रूप में उभरकर सामने आती है। यानी ऐसी स्थिति जिसमें ताकतवर जीवाणु या विषाणु दवाओं से नहीं मरते और उन पर साधारण रोग प्रतिरोधक दवाएं काम नहीं करतीं। ऐसे में न सिर्फ मरीजों पर दवाओं का खर्च बढ़ता जाता है, बल्कि भविष्य में यह स्थिति कई अन्य बीमारियों को न्योता देती है और सामान्य संक्रमण यानी खांसी, बुखार या घाव होने पर भी इलाज मुश्किल हो जाता है।

सबसे बड़ी बात यह है कि ये दवाएं हानिकारक जीवाणुओं के साथ-साथ अच्छे जीवाणुओं को भी मार देती हैं। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की रपट के अनुसार, देश में हर साल लगभग सात लाख लोग एंटीबायोटिक दवाओं के प्रति प्रतिरोध से जुड़ी बीमारियों से प्रभावित होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि अगर इस समस्या पर रोक नहीं लगी, तो वर्ष 2050 तक भारत समेत विश्व में इस स्थिति से करीब एक करोड़ लोगों की मौत प्रति वर्ष हो सकती है।

दवाओं के सेवन से संबंधित प्रश्न और उत्तर

एक दिन में तीन बार एक महीने तक दर्द निवारक गोली डिक्लोफेनाक पेरासिटामोल लेने के क्या फायदे और नुकसान है।

डॉक्टर्स द्वारा डिक्लोफेनाक और पेरासिटामोल का उपयोग दर्द और सूजन को कम करने के लिए रोगी को दी जाती है, लेकिन इन्हें एक महीने तक दिन में तीन बार लेने के कुछ फायदे और नुकसान हो सकते हैं।

फायदे ये होते है।

दर्द निवारण - यह दवाएं रोगी को प्रभावी रूप से दर्द में राहत प्रदान करती है।

सूजन - डिक्लोफेनाक एक एनएसएआईडी (गैर-स्टेरॉयड एंटी-इंफ्लेमेटरी ड्रग) है, जो रोगी की सूजन और जलन को कम करने में मदद करती है।

बुखार - पेरासिटामोल बुखार को कम करने में भी मदद करता है।

नुकसान ये होते है

गैस्ट्रिक समस्याएं दवाओं के सेवन से संबंधित प्रश्न और उत्तर - डिक्लोफेनाक के लंबे समय तक उपयोग से पेट में जलन, अल्सर, और गैस्ट्रिक समस्याएं हो सकती हैं, इसलिए साथ में खाली पेट ली जाने वाली पेंटोप्राजोल या ओमेप्राजोल आदि के सेवन की सलाह दी जाती है।

लिवर डैमेज - पेरासिटामोल का लंबे समय तक या अधिक मात्रा में सेवन करने से लिवर को नुकसान हो सकता है। इसलिए समय पर लीवर की जांच जरूरी है

किडनी - डिक्लोफेनाक और पेरासिटामोल दोनों ही लंबे समय तक उपयोग करने पर किडनी पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं। इसलिए समय-समय पर किडनी की जांच जरूरी है।

हृदय रोग का जोखिम - डिक्लोफेनाक के अधिक मात्रा में सेवन करने से हृदय रोग का जोखिम बढ़ सकता है।

एलर्जिक रिएक्शन - कुछ लोगों को इन दवाओं से एलर्जी हो सकती है, जैसे कि त्वचा पर रैशेस, खुजली, या सांस लेने में कठिनाई आदी।

इन दवाओं को लंबे समय तक लेने से पहले डॉक्टर से परामर्श करना महत्वपूर्ण है, ताकि वे आपके स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए सही मार्गदर्शन दे सकें और दुष्प्रभावों पर निगरानी रखते और उनको नियंत्रित करते हुए आपके रोग को ठीक कर सकें।

केंद्र का बड़ा फैसला : दवा के दुष्प्रभावों की तुरंत रिपोर्टिंग के लिए नया नियम

केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (CDSCO) ने देश भर के सभी थोक और खुदरा मेडिकल स्टोर्स के लिए एक महत्वपूर्ण व्यवस्था अनिवार्य कर दी है।

मुख्य अनिवार्यताएँ - QR कोड (Quick Response Code): प्रत्येक मेडिकल स्टोर पर अनिवार्य रूप से एक क्यूआर कोड ऐसी जगह पर लगाया जाएगा, जहाँ ग्राहक उसे आसानी से स्कैन कर सकें।

टोल-फ्री नंबर: फार्माकोविजिलेंस प्रोग्राम ऑफ इंडिया (PvPI) का टोल-फ्री नंबर 1800-180-3024 प्रमुखता से प्रदर्शित करना अनिवार्य है।

इस पहल का उद्देश्य (जनहित में) इस कदम का मुख्य उद्देश्य आम जनता और स्वास्थ्यकर्मियों को दवा से होने वाले किसी भी दुष्प्रभाव (Adverse Drug Reaction) की तुरंत और आसानी से रिपोर्ट करने के लिए एक सीधा माध्यम उपलब्ध कराना है। यदि किसी उपभोक्ता को दवा के सेवन के बाद कोई दुष्प्रभाव महसूस होता है, तो वे तुरंत इन माध्यमों का उपयोग करके इसकी सूचना दे सकते हैं। यह व्यवस्था दवा

सुरक्षा निगरानी को मजबूत करेगी।

निर्णयः यह फैसला 18 जून 2025 को हुई PvPI की 15वीं स्टीयरिंग ग्रुप मीटिंग में लिया गया था। ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया (DCGI) ने सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के लाइसेंसिंग अधिकारियों को इस संबंध में औपचारिक नोटिफिकेशन जारी कर दिया है।

स्वास्थ्य चेतावनी: नकली दवा का खतरा!

वाईएल फार्मा की 'मोंटेल्यूकास्ट सोडियम' टैबलेट्स नकली पाई गई – बिक्री और निर्माण पर तुरंत रोक!

जयपुर (राजस्थान) से आई एक अत्यंत गंभीर खबर के अनुसार : निर्माता कंपनी: हिमाचल प्रदेश की वाईएल फार्मा।

दवा का नाम : लिवोसिट्रिजिन डाई हाइड्रो क्लोराइड एंड मोंटेल्यूकास्ट सोडियम टैबलेट।

रोक का कारण: जयपुर स्थित सरकारी ड्रग टेस्टिंग लैब की जांच में दवा के दो बैच नकली पाए गए हैं।

गंभीरता : जांच के दौरान, नकली पाए गए बैच में दवा का मोंटेल्यूकास्ट घटक शून्य पाया गया है, जिसका अर्थ है कि मरीज़ को दवा का कोई लाभ नहीं मिलेगा, बल्कि यह उनके स्वास्थ्य के लिए खतरा हो सकता है।

नकली पाए गए बैच का विवरण:

दवा का नाम लिवोसिट्रिजिन डाई हाइड्रो क्लोराइड एंड मोंटेल्यूकास्ट सोडियम टैबलेट

बैच नंबर वाईएलटी-25029

निर्माण तिथि सितंबर - 2025

एक्सपायरी तिथि अगस्त - 2027

त्वरित कार्रवाई के निर्देश : ड्रग कंट्रोलर अजय फाटक के आदेश पर, इन बैच नंबर की दवाओं के स्टॉक को तुरंत जब्त करने के निर्देश दिए गए हैं।

आम जनता के लिए अपील : यदि आप या आपके परिवार का कोई सदस्य इस दवा का सेवन कर रहा है, और ऊपर बताए गए बैच नंबर की दवा है, तो इसका सेवन तुरंत बंद कर दें और इसे अपने फार्मासिस्ट या डॉक्टर को लौटा दें।

अपने डॉक्टर से परामर्श करके सुरक्षित और मान्य विकल्प प्राप्त करें।

बिना लाइसेंस के संचालित किए जा रहे मेडिकल स्टोर को किया सील

आयुर्वेदिक क्लीनिक पर छापेमारी कर एक फर्जी डॉक्टर को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने इलाकाई कोतवाली क्षेत्र के कोटा के गांव में बिना डिग्री के क्लीनिक चलाने वाले फर्जी डॉक्टर को गिरफ्तार किया है। आयुर्वेदिक स्वास्थ्य विभाग की टीम ने छापेमारी करते हुए अवैध क्लीनिक का भंडाफोड़ किया। छापेमारी के दौरान टीम ने काफी मात्रा में नकली दवाइयां जब्त की। क्लीनिक में मौके पर फर्जी डॉक्टर मरीज का इलाज करते हुए मिला।

पुलिस ने स्वास्थ्य विभाग के डॉक्टर की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया है। क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी शारदा प्रसाद ने पुलिस शिकायत में बताया कि उनको महानिदेशक आयुष मानवेंद्र सिंह से व्हाट्सएप पर शिकायत मिली थी। सूचना के तहत एसडीएम मेजा दशरथ कुमार ने रहमत दवाखाना कोटहा के पते पर औचक निरीक्षण किया गया।

दवाओं का अवैध भंडारण - दबिश के दौरान मौके पर सद्दाम हुसैन पुत्र बुद्ध हुसैन 15 मलाहीपुर बिलारी देहात मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश द्वारा कुसुम देवी पत्नी धर्मराज निवासी नेवढ़िया का इलाज करते हुए पाया गया। क्लीनिक में कई बोरियों

में दवाइयां भी मिली। टीम के मांगने पर सद्दाम हुसैन चिकित्सा संबंधी कोई योग्यता एवं डिग्री नहीं दिखा सका। मौके पर कई डिब्बों में संदिग्ध पाउडर पाया गया, जिसे सद्दाम आयुर्वेदिक दवा बताया।

जहरीले कफ सिरप और अमानक आयुर्वेदिक औषधियाँ: छिंदवाड़ा में बड़ा एक्शन

यह घटना बिछुआ, छिंदवाड़ा में हुई थी, जिसका उल्लेख खबर के शुरुआती हिस्से में है :

मूल घटना : छिंदवाड़ा के बिछुआ इलाके में 30 अक्टूबर को कथित रूप से कोल्डड्रिफ कफ सिरप के सेवन से एक 5 माह की बच्ची (रूही मिनोटे) की मौत हो गई थी। बाद में, यह मामला बड़े स्तर पर सामने आया और मध्य प्रदेश और राजस्थान समेत कई राज्यों में बच्चों की मौतें इस सिरप से जुड़ी पाई गईं।

जांच रिपोर्ट: तमिलनाडु सरकार और छिंदवाड़ा प्रशासन द्वारा कराई गई लैब रिपोर्ट में चौंकाने वाला खुलासा हुआ। कोल्डड्रिफ कफ सिरप में जहरीला रसायन डायएथिलीन ग्लाइकोल (DEG) की मात्रा 48.6% पाई गई, जबकि यह दवा में बिल्कुल नहीं होना चाहिए या बहुत ही सीमित मात्रा में इसकी अनुमति होती है (तय मानक से 450-480 गुना ज्यादा)।

कार्रवाई और अपडेट : इस सिरप को बनाने वाली तमिलनाडु की कंपनी श्रीसन फार्मास्यूटिकल्स (Sresan Pharmaceuticals) के सभी उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। कंपनी का विनिर्माण लाइसेंस रद्द कर दिया गया और मालिक जी. रंगनाथन को गिरफ्तार कर लिया गया है। इस सिरप को लिखने वाले छिंदवाड़ा के डॉक्टर प्रवीण सोनी को भी गिरफ्तार किया गया था।

मध्य प्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, केरल और हिमाचल प्रदेश समेत कई राज्यों में इस सिरप की बिक्री पर रोक लगा दी गई है। प्रवर्तन निदेशालय (ED) ने भी कंपनी से जुड़े परिसरों पर छापामारी की है।

सात आयुर्वेदिक औषधियाँ जांच में फेल - यह मामला भी बिछुआ में हुई बच्ची की मौत की जांच से जुड़ा हुआ है:

जांच का आधार: बच्ची को 'कासामृत सिरप' और कुछ पुड़िया दी गई

थीं। बच्ची की मौत के बाद, उसके इलाज के लिए इस्तेमाल की गई दवाओं के सैंपल जांच के लिए भेजे गए थे।

परिणाम: जांच के लिए भेजे गए सैंपलों में से सात आयुर्वेदिक औषधियाँ मानक गुणवत्ता (Not of Standard Quality - NSQ) पर खरी नहीं उतरीं, यानी वे अमानक पाई गईं।

अमानक पाई गई दवाएं (बैच-विशिष्ट) : गिलोय सत्व, कामदुधा रस, प्रवाल पिष्टी, मुक्ता शक्ति भस्म, लक्ष्मी विलास रस, कफ कुठार रस

नोट: खबर के अनुसार, 'कासामृत सिरप' का बैच स्टैंडर्ड क्वालिटी में पाया गया, लेकिन जिन दवाओं से पुड़िया बनाई गई थी, उनमें से सात अमानक पाई गईं।

आयुष विभाग का एक्शन: जिला आयुष अधिकारी के निर्देश पर, इन अमानक बैचों की बिक्री, स्टोरेज और वितरण पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी गई है।

निर्देश : सभी औषधि विक्रेताओं को तुरंत यह स्टॉक हटाने और कंपनी को वापस करने के निर्देश दिए गए हैं। पूरे प्रदेश में निगरानी बढ़ाने और उल्लंघन करने वालों पर कठोर कार्रवाई की बात कही गई है।

गोल्डन ब्लड ग्रुप तैयार करने की कोशिश

दुनिया भर के हर 60 लाख लोगों में सिर्फ़ एक इंसान का ब्लड ग्रुप आरएच नल होता है । अब रिसर्चर इस ब्लड ग्रुप को लैब में तैयार करने की कोशिश कर रहे हैं ताकि लोगों की जान बचाई जा सके। ब्लड ट्रांसफ़्यूज़न यानी मरीज़ को ब्लड चढ़ाने की प्रक्रिया ने मॉडर्न मेडिसिन को बदल दिया है। अगर हम कभी घायल हो जाएं या किसी मेडिकल इमरजेंसी में सर्जरी की ज़रूरत पड़े, तो दूसरों का डोनेट किया गया ब्लड जान बचाने में मददगार होता है।

लेकिन हर किसी को ब्लड ट्रांसफ़्यूज़न का फ़ायदा नहीं मिल पाता। ख़ासकर दुर्लभ ब्लड ग्रुप वाले लोगों को मैचिंग ब्लड पाने में काफ़ी संघर्ष करना पड़ता है।

ASHOKA FURNISHINGS
G.S Road, Guwahati-5,
Tel - 0361-2457801-02,
Babu Bazaar, Fancy Bazaar Guwahati1
0361-2637326

JANGID HOSPITAL
Nawalgarh, Jhunjhunu Distt.
झुंझनू जिले के निवासियों की स्वास्थ्य रक्षा का प्रहरी
Dr. Manish Sharma
Consultant Anaesthesiologist & Intensivist
Mo: 9414402800, Ph: 1594-225500

69 वर्षीय शफूर मोहम्मद के सिर से कैंसर का ट्यूमर सफलतापूर्वक निकाला

मेडिकल साइंस का चमत्कार

● हैल्थ व्यू

जयपुर। चिकित्सा विज्ञान ने एक बार फिर अभूतपूर्व तरक्की का प्रदर्शन करते हुए 69 वर्षीय शफूर मोहम्मद को नया जीवन प्रदान किया। कोटा निवासी मोहम्मद, जो काफी समय से सिर में गांठ की अनदेखी कर रहे थे क्योंकि उससे उन्हें कोई तकलीफ नहीं हो रही थी, उन्हें तब अस्पताल का रुख करना पड़ा जब अचानक कमजोरी, नसों में दर्द और बेहोशी की स्थिति गंभीर हो गई।

डॉ. आर.पी.सैनी

जटिल ऑपरेशन हुआ सफल – धनवंतरी हॉस्पिटल पहुंचने पर, निदेशक डॉ. आर.पी. सैनी ने जाँच के बाद पुष्टि की कि गांठ दरअसल कैंसर का ट्यूमर थी। डॉ. सैनी की सलाह पर, न्यूरो सर्जन डॉ. मोहन लाल ऐचरा और उनकी कुशल टीम ने इस चुनौतीपूर्ण ऑपरेशन को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। 'क्रानियोटॉमी' और 'ट्यूमर एक्सिशन' प्रक्रिया के माध्यम से यह जटिल ऑपरेशन लगभग तीन से चार घंटे तक चला।

डॉ. ऐचरा ने बताया कि यह ऑपरेशन बेहद जोखिम भरा था क्योंकि ट्यूमर सिर की गहराई में स्थित था और एक छोटी सी चूक भी मरीज के लिए घातक साबित हो सकती थी। लेकिन, उनकी विशेषज्ञता और टीम वर्क के बल पर शफूर मोहम्मद को नया जीवन मिला।

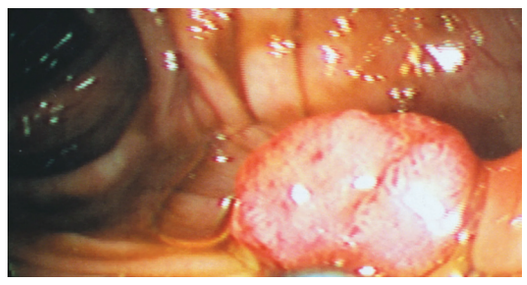

स्वास्थ्य समस्याओं को नजरअंदाज न करने की अपील – डॉ. आर.पी. सैनी ने इस घटना से सबक लेने की अपील करते हुए कहा कि शरीर में किसी भी असामयिक परिवर्तन जैसे गांठ, छाले, या दर्द को हल्के में नहीं लेना चाहिए। उन्होंने जोर दिया कि समय पर चिकित्सीय परामर्श और उचित उपचार जीवन बचा सकता है। यह सफल ऑपरेशन चिकित्सा विज्ञान की उन्नति और डॉक्टरों की कड़ी मेहनत का एक जीता-जागता उदाहरण है, जो यह साबित करता है कि आज ऐसी जटिल समस्याओं का इलाज भी संभव है, जो कभी असंभव लगती थीं।

संपर्क सूत्र डॉक्टर आर.पी. सैनी 9829055760

पार्किंसंस रोग : अब सबसे तेजी से बढ़ने वाली मस्तिष्क की बीमारी

विश्व मूवमेंट डिसऑर्डर दिवस, प्रत्येक वर्ष 29 नवंबर को यह दिवस मनाया जाता है।

● हैल्थ व्यू

महत्व: यह दिन न्यूरोलॉजी के जनक कहे जाने वाले प्रोफेसर जीन-मार्टिन चारकोट के जन्मदिन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। मूवमेंट डिसऑर्डर के उपचार में नई तकनीकें आज मूवमेंट डिसऑर्डर के उपचार में महत्वपूर्ण साबित हो रही हैं।

डीप ब्रेन स्टिमुलेशन (DBS) DBS एक सर्जिकल प्रक्रिया है जिसमें मस्तिष्क के विशिष्ट क्षेत्रों में इलेक्ट्रोड लगाए जाते हैं। ये इलेक्ट्रोड गति को नियंत्रित करने वाली असामान्य तंत्रिका गतिविधि को नियंत्रित करने के लिए विद्युत आवेग (Pulses) भेजते हैं। यह तकनीक उन्नत पार्किंसंस रोग और अन्य मूवमेंट डिसऑर्डर (जैसे एसेंशियल ट्रेमर, डिस्टोनिया) में कंपन (Tremor), अकड़न और गति में उतार-चढ़ाव को प्रबंधित करने के लिए बहुत प्रभावी है।

डॉ. वैभव माथुर

फोकस्ड अल्ट्रासाउंड – यह एक गैर-सर्जिकल (बिना चीरा लगाए) उपचार है। इस प्रक्रिया में, MRI के मार्गदर्शन में, मस्तिष्क के कंपन (Tremor) उत्पन्न करने वाले हिस्से को उच्च-तीव्रता वाली अल्ट्रासाउंड किरणों से लक्षित किया जाता है। यह तकनीक कंपन को कम करने में काफी सफल साबित हुई है और यह उन मरीजों के लिए एक नया विकल्प है जो ब्रेन सर्जरी (DBS) नहीं कराना चाहते।

ब्लैडर पेसमेकर – ब्लैडर पेसमेकर को अक्सर सैक्रल न्यूरोमोड्यूलेशन (SNM) या ब्लैडर बोटॉक्स इंजेक्शन के साथ जोड़कर समझा जाता है, जिसका उपयोग मूवमेंट डिसऑर्डर के कारण होने वाली यूरिन कंट्रोल की समस्या (मूत्र असंयम) के इलाज के लिए किया जाता है। DBS तकनीक भी कुछ हद तक ब्लैडर कंट्रोल में मदद कर सकती है।

वोकल कॉर्ड बोटॉक्स इंजेक्शन – यह डिस्टोनिया से पीड़ित उन रोगियों के लिए इस्तेमाल किया जाता है जिनकी आवाज की मांसपेशियां अनैच्छिक रूप से सिकुड़ती हैं, जिससे बोलने में कठिनाई (स्पैस्मोडिक डिस्फोनिया) होती है।

नवीनतम अनुसंधान और आशा – मूवमेंट डिसऑर्डर पार्किंसन'स न्यूरोलॉजिस्ट डॉक्टर वैभव माथुर ने कहा कि पार्किंसंस रोग का कोई ज्ञात इलाज अभी तक नहीं है, लेकिन चल रहे शोध से उपचार की नई उम्मीदें मिली हैं।

दवाओं का विकास: नई दवाएं (जैसे विस्तारित-रिलीज वाली लेवोडोपा, डोपामाइन एगोनिस्ट) विकसित की जा रही हैं जो लक्षणों को अधिक प्रभावी ढंग से और कम साइड इफेक्ट्स के साथ प्रबंधित कर सकें।

बायोमार्कर की खोज: वैज्ञानिक ऐसे 'बायोमार्कर' खोजने की कोशिश कर रहे हैं जो बीमारी के शुरू होने से पहले ही इसका पता लगा सकें।

संपर्क सूत्र डॉक्टर वैभव माथुर
मो : + 9852660201

HBOT थेरेपी और रक्त संचार : फायदे व सावधानियां

● हैल्थ व्यू

हाल के वर्षों में हाइपरबेरिक ऑक्सीजन थेरेपी (HBOT) तेजी से लोकप्रिय हो रही है। यह थेरेपी एक विशेष प्रेशर चैम्बर में 100% शुद्ध ऑक्सीजन देकर शरीर के ऊतकों तक अधिक ऑक्सीजन पहुँचाने का काम करती है। थेरेपी विशेषज्ञ डॉ रमेश अग्रवाल के अनुसार इससे रक्त संचार में उल्लेखनीय सुधार होता है और शरीर की क्षतिग्रस्त कोशिकाएं तेजी से रिकवर करती हैं।

डॉ रमेश अग्रवाल

जयपुर के हाइपरबेरिक मेडिसिन विशेषज्ञ डॉ. अग्रवाल बताते हैं, '॥क्चह्रञ्ज से खून में ऑक्सीजन घुलनशीलता बढ़ती है, जिससे ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है और घाव भरने की गति दोगुनी तक हो जाती है। डायबिटिक फुट, रेडिएशन इंजरी, कार्बन मोनोऑक्साइड पॉइजनिंग, नॉन-हीलिंग वाउंड्स और न्यूरोलॉजिकल कंडीशंस में यह अत्यंत उपयोगी साबित हुई है।'

फायदे: - रक्त संचार और ऊतकों में ऑक्सीजन सप्लाई बढ़ती है - सूजन में कमी - घाव और सर्जरी के बाद रिकवरी में तेजी - मस्तिष्क कोशिकाओं में ऑक्सीजनमेंट सुधरने से न्यूरोलॉजिकल लाभ

नुकसान / सावधानियां: विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि यह थेरेपी हमेशा प्रशिक्षित डॉक्टर की निगरानी में ही कराना चाहिए। अनियंत्रित उपयोग से कान में दर्द, साइनस प्रेशर, ऑक्सीजन टॉक्सिसिटी, क्लौस्ट्रोफोबिया और दुर्लभ मामलों में फेफड़ों पर दबाव बढ़ सकता है। गर्भवती महिलाओं, अनियंत्रित बीपी, COPD या फेफड़ों में ब्लॉब (ड्ढद्यद्गड्ढह्य) वाले मरीजों को विशेष सावधानी रखने की सलाह दी जाती है।

डॉक्टर अग्रवाल का मानना है कि सही प्रोटोकॉल के साथ किया गया ॥क्चह्रञ्ज रक्त संचार को बेहतर बनाकर अनेक गंभीर स्थितियों में जीवनरक्षक साबित हो सकता है, लेकिन इसे केवल विशेषज्ञ की सलाह पर ही कराना सुरक्षित है।

सम्पर्क सूत्र डॉ रमेश अग्रवाल मो 982-901-7133

जटिल फेफड़ों की सर्जरी में नव-कीर्तिमान

डॉ. आर.सी. शेरावत की गौरवशाली उपलब्धि

● हैल्थ व्यू

जयपुर के चिकित्सा जगत में एक और गौरवशाली अध्याय जुड़ गया है। शहर के निजी अस्पताल में पदस्थ प्रसिद्ध सीटीबीएएस सर्जन डॉ. आर.सी. शेरावत ने अपनी विशेषज्ञता और दृढ़ संकल्प से एक अत्यंत जटिल फेफड़ों के ऑपरेशन को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है। यह न केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि राजस्थान के चिकित्सा क्षेत्र के लिए भी गर्व का क्षण है।

डा. आर सी शेरावत

ऑपरेशन की मुख्य बातें : जटिल प्रक्रियाः डॉ. शेरावत ने फेफड़ों की उन्नत सर्जरी - लोबेक्टोमी और न्यूमोनेटोमी की नई शुरुआत करते हुए इस ऑपरेशन को सफलतापूर्वक पूरा किया।

गंभीर मामलाः 23 वर्षीय एक युवती, जो पिछले तीन महीने से लगातार हेमोप्टाइसिस (खून वाली खांसी) से पीड़ित थी, उसकी विस्तृत जाँच में लेफ्ट लिंगुलर और लेफ्ट लोअर लोब में गंभीर ब्रोन्किएक्टेसिस और सिस्टिक परिवर्तन पाए गए थे। सफलताः डॉ. शेरावत और उनकी समर्पित टीम ने लगभग तीन घंटे तक चली इस जटिल सर्जरी में प्रभावित लोब को हटाकर सफलतापूर्वक रक्तस्राव को नियंत्रित किया।

सहयोग: एनेस्थेटिस्ट डॉ. मुकेश गर्ग ने उन्नत एयरवे मैनेजमेंट और डबल ल्यूमेन वेंटिलेशन जैसी तकनीकी सहायता प्रदान कर इस सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डॉ. आर.सी. शेरावत ने इस जटिल चुनौती को स्वीकार कर अपनी असाधारण प्रतिभा का प्रदर्शन किया है।

संपर्क सूत्र डॉ आर सी शेरावत मो +9194142 54588

दुर्लभ ट्यूमर का सफल इलाज

एसएमएस अस्पताल में रोबोटिक सर्जरी का कमाल

डॉ नीरज अग्रवाल

जयपुर के एसएमएस अस्पताल के यूरोलॉजी विभाग के सीनियर प्रोफेसर डॉ नीरज अग्रवाल ने बताया कि यूरोलॉजी विभाग में 25 वर्षीय अजय की सफलतापूर्वक रोबोटिक सर्जरी की गई, जिनके शरीर में एक साथ किडनी, ब्रेन, लंग्स (फेफड़े) और स्किन में ट्यूमर मौजूद थे।

यह ट्यूबरस स्केलेरोसिस कॉम्प्लेक्स (TSC) का एक अत्यंत दुर्लभ मामला है, जो देश और प्रदेश में विरले ही देखने को मिलता है।

रोबोटिक तकनीक बनी वरदान – इस जटिल ऑपरेशन में रोबोटिक सर्जरी का उपयोग किया गया, जिसने अजय की दोनों किडनियों से ट्यूमर को सटीकता से निकाला। सबसे खास बात यह रही

कि पारंपरिक सर्जरी के विपरीत, इस उन्नत तकनीक से अजय की केवल 15% किडनी ही निकालनी पड़ी, जबकि सामान्य प्रक्रिया में 30 से 40% हिस्सा निकालना पड़ सकता था।

रिकवरी में तेज़ी: रोबोटिक सर्जरी का ही कमाल है कि ऑपरेशन के सिर्फ दो दिन बाद अजय चलने-फिरने लगे और उनकी रिकवरी भी पूरी तरह से हो गई।

कम क्षति, ज्यादा सटीकताः यूरोसर्जरी के सीनियर प्रोफेसर डॉ. नीरज अग्रवाल और उनकी टीम ने रोबोटिक सर्जरी से ट्यूमर को अधिक सटीकता से हटाया गया, जिससे अजय की बाकी किडनी को सुरक्षित रखा जा सका और रक्तस्राव भी कम हुआ।

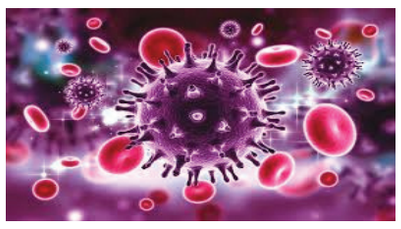

अस्पताल के अधीक्षक ने इस दुर्लभ केस की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की और बताया कि यह राज्य में अपनी तरह का पहला और देश में 60 से भी कम मामलों में से एक है।

सम्पर्क सूत्र : डॉ नीरज अग्रवाल मो 941-420-7148

एचआईवी/एड्स : समय पर पहचान और जागरूकता ज़रूरी

एसएमएस मेडिकल कॉलेज के चर्मरोग विशेषज्ञ डॉ. पुनीत भार्गव ने एचआईवी/एड्स के प्रति जागरूकता और समय पर पहचान के महत्व पर ज़ोर दिया है।

डॉ. पुनीत भार्गव

शुरुआती लक्षण हैं महत्वपूर्ण – डॉ. भार्गव के अनुसार, एचआईवी संक्रमण के शुरुआती लक्षण महीनों या सालों तक नज़र नहीं आते, लेकिन कुछ शुरुआती संकेत महत्वपूर्ण हो सकते हैं। अगर किसी व्यक्ति को तीन महीने से अधिक समय तक लगातार खांसी, बार-बार बीमार पड़ना या कम समय में 10% से अधिक वज़न घटना जैसे लक्षण दिखें, तो उन्हें तुरंत जांच करानी चाहिए।

डॉ. भार्गव ने बताया कि एचआईवी हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता, विशेषकर लिम्फोसाइट कोशिकाओं को कमज़ोर करता है, जिससे शरीर संक्रमणों से लड़ने की शक्ति खो देता है।

संक्रमण का माध्यम और बचाव

एचआईवी का संक्रमण मुख्य रूप से असुरक्षित यौन संबंध, संक्रमित रक्त/वीर्य, योनि द्रव्य और माँ से बच्चे में (जन्म के दौरान) फैलता है। उन्होंने कहा कि साझा सुइयों या संक्रमित रक्त चढ़ाने से भी खतरा होता है।

संक्रमण से बचाव के लिए सुरक्षित यौन संबंध और एक बार इस्तेमाल होने वाली सुइयों का उपयोग अनिवार्य है। डॉ. भार्गव ने यह भी स्पष्ट किया कि एड्स कोई छुआछूत की बीमारी नहीं है और संक्रमित व्यक्ति को समाज में सहयोग और स्वीकार्यता मिलनी चाहिए।

संपर्क सूत्र
डॉक्टर पुनीत भार्गव
मो – 98290 53280

नशा बना 'साइलेंट किलर', युवा पीढ़ी में बदल रहे हैं इस्तेमाल के तरीके: डॉ. अनिल तांबी ने जताई चिंता

डॉ. अनिल तांबी

जयपुरः देश में बढ़ते अपराधों के पीछे नशा एक मुख्य कारण बनकर उभरा है, और यह चिंताजनक है कि युवा पीढ़ी में इसके इस्तेमाल के तरीके खतरनाक रूप से बदल रहे हैं। जयपुर के जाने-माने मनोचिकित्सक डॉ. अनिल तांबी ने इस गंभीर मुद्दे पर प्रकाश डालते हुए चेतावनी दी है कि शराब की अनुपलब्धता के बाद किशोर और युवा अब विकल्प के तौर पर लाइसेंस, स्नर्फिक्स, सॉल्वेंट्स (जैसे थिनर, लाइटर फ्लूइड) और यहां तक कि कुछ दवाइयों का दुरुपयोग कर रहे हैं। यह प्रवृत्ति किशोरों को गंभीर मानसिक और मनोवैज्ञानिक विकारों की ओर धकेल रही है, जिससे उनमें आक्रामकता और आपराधिक गतिविधियों में संलिप्तता तेजी से बढ़ रही है। डॉ. तांबी के अनुसार, अब नाबालिग चोरी, दुष्कर्म और हत्या जैसे संगीन मामलों में भी शामिल पाए जा रहे हैं, जो समाज और अभिभावकों के लिए एक बड़ी चुनौती है।

सामाजिक बदलाव, पारिवारिक देखरेख में कमी और नैतिक शिक्षा के अभाव को भी इस समस्या का कारण माना जा रहा है। युवाओं द्वारा किए जा रहे इन अपराधों के पीछे का मुख्य उद्देश्य अक्सर नशे की लत को पूरा करने के लिए पैसा जुटाना होता है।

इस 'साइलेंट किलर' से निपटने के लिए परिवारों, स्कूलों और समाज को एकजुट होकर काम करने की आवश्यकता है, ताकि युवा पीढ़ी को बर्बादी के रास्ते से बचाया जा सके।

संपर्क सूत्र
डॉक्टर अनिल तांबी
मो – 93146 01439

शादी दिलों का मेल है,
उसे यादगार बनाइए
वैवाहिक परिधानों की सम्पूर्ण रेंज
Raja Sahab
His & Hers Store
Raja Park, Jaipur. Ph. : 2623001-002

काबरा आई हॉस्पिटल
सोडाला में
चश्मा हटाने की
नई Touch Free लेजर

काबरा आई हॉस्पिटल
नेत्र रोगों का सम्पूर्ण इलाज | स्त्री रोगों एवं शिशु रोगों का इलाज
जमुना नगर, सोडाला, अजमेर रोड, जयपुर
फोन 9887469598,9529888000

Dr. Pushkar Gupta
MD (Med.), DM, DNB (Neuro)
Consultant
Neurologist
C.K. BIRLA Hospital
Resi : A-13, Jai Jawan-1, Tonk Road, Durgapura. Jaipur
Mo : 9828020015

DR. NAVNEET SAXENA
Senior Consultant Nephrologist Professor,
Jaipur National University Hospital
: Clinic address :
KIDNEY CARE AND GENERAL HOSPITAL
388, Laxman path Vivek vihar Opp vivek metro station,
jaipur 19 Contact no 9571657457

पाइल्स हॉस्पिटल
पाइल्स (बवासीर) व अन्य गुदारोगों का अस्पताल
A DAY CARE ANOREACTAL SURGERY CENTRE
डॉ. दिनेश शाह वरिष्ट पाइल्स एवं गुदा रोग विशेषज्ञ M.S., FAIS, FIAGES, FACRSI
डॉ. अंशुल शाह मो. 8209632767
6/64, विद्याधर नगर, जयपुर
फोन - 0141-2334959

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक रमन अग्रवाल द्वारा 170/ 3, रामगली राजापार्क के लिए जयपुर से प्रकाशित एवं मोहन शर्मा एंड कंपनी प्रा. लि., ए-10, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, जयपुर से मुद्रित। सम्पादक : रमन अग्रवाल, सह सम्पादक - मीना अग्रवाल, 9829066272